

102 NOT OUT

- ३० अनमोल कविताएं विकास बंसल द्वारा -

बाप की उमंग
बेटे को करे तंग

बाप हरा मरा
बेटा डरा डरा

बाप का सियापा
बेटे का बुढ़ापा

बाप ज़िंदादिल
बेटा बड़ी मुश्किल

बाप बिंदास
बेटा खल्लास

बाप फ़िट
बेटा खिटखिट

बाप का नज़रिया
बेटे की उमरिया

बाप की शरारत
बेटे की बग़ावत

बाप का अरमान
बच्चे की जान

बाप बैजोड़
बेटा उम्मीद छोड़



आदरणीय अमितजी,

जब भी आपकी कोई नई फ़िल्म रिलीज़ होने वाली होती है, हम सब में उत्साह और उल्लास भर जाता है। सच पूछें तो उस से भी पहले - जैसे ही शूटिंग शुरू होती है, हम आपसे पूछने लगते हैं कि कब फ़िल्म थिएटर में आएंगी, कब हम देख सकेंगे। ब्लॉग पर आप शूटिंग की गतिविधियों का जिक्र करते हैं और हमारी उत्सुकता और प्रसन्नता बढ़ने लगती है। फिर रिलीज़ की तारीख निर्धारित होती है, और हमारी प्रतीक्षा प्रारम्भ हो जाती है। जैसे परिवार के सब सदस्य एक नवजात शिशु के घर में आगमन की राह देखते हैं, उमंग से, हसरत से, हम सब भी राह देखने लगते हैं। जैसे जैसे तारीख क्रीब आती जाती है, हमारा उत्साह बढ़ता जाता है। २००९ की पा से मई २०१८ में आने वाली १०२ नॉट आउट तक यही सिलसिला रहा है। कुछ वर्षों से फ़िल्म का प्रमोशन और प्रचार रिलीज़ से पहले की गतिविधियों का एक अभिन्न अंग बन चुका है, और कई EF उसमें भाग लेते हैं।

बहुत खुशी होती है कि विकास अपनी पूरी निष्ठा और ईमानदारी से इस प्रक्रिया का हिस्सा बन जाता है और अपना तन, मन, धन लगा देता है। विकास में कविता लिखने की सहज प्रतिभा है। उसकी कविताएँ मैं कई सालों से पढ़ रही हूँ। अचम्भा होता है कि किस आसानी से और कितने कम समय में वह कविता लिख लेता है। १०२ नॉट आउट के कथानक और पात्रों पर केंद्रित ३० कविताओं का यह संग्रह आने वाली फ़िल्म की सफलता में अपना योगदान देने का विकास का प्रयास है। मेरी और हर EF की शुभकामनाएँ उसके साथ हैं, आपकी इस नई फ़िल्म के साथ हैं। फ़िल्म सफल हो, दर्शकों तथा आलोचकों द्वारा सराही जाए, पसंद की जाए, आपके लगभग ५० वर्षों के फ़िल्म जीवन के सफ़र में एक नया कीर्तिमान स्थापित करे, उसका सन्देश और फ़लसफ़ा - कि जीवन को भरपूर जीना चाहिए, उम्र की सीमाओं में नहीं बंधना चाहिए - सब तक पहुँचे और नई स्फूर्ति, नए जोश का संचार करे, इसी कामना के साथ,

जौस्मिन जयवंत

तथा ब्लॉग परिवार के सभी सदस्य

बाप बेजोड़ बेटा उर्मीद छोड़

१०२ साल उम्र बनाना चाहता सबसे ज्यादा ज़िन्दगी जीने का कीर्तिमान
१६ साल हैं बचे पर अपने ७५ साल के बेटे से हैं वो बहुत ज्यादा परेशान
वो बड़ा है फिर भी मज़े ले रहा ज़िन्दगी के और अपने पैरों पर खड़ा है
वो बच्चा है, कच्चा है, वृद्ध अवस्था को अपनाने की ज़िद पर अड़ा है
कहता बाप लिख एक ख़त प्यार के नाम जीने की वजह तू पैदा कर
झीक के, यूँ साँस खींच के न तू बुढ़ापे से इस हसीं ज़िन्दगी का सौदा कर
नहीं कछु हो पा रहा तो बाप अपने बेटे को वृद्ध आश्रम भेजने पर मजबूर
दे रहा गाली बेटा कहता जाऊँगा अदालत खिलाफ़ तुम्हारे दिखा रहा गुस्सर
जब हो बच्चा नालयक तो भूलकर उसे बस उसका बचपन याद रखना चाहिये
क्या होगा आगे अब इस कहानी में देखना है ४ मई को सबको याद रखना चाहिये

102 NOT OUT

4th May 2018

बाप का नज़रिया बेटे की उमरिया

क्यों मेरे नज़रिये से जदा है तेरा नज़रिया
तू कहाँ हुआ है बुड़ा अभी, बुड़ा होने की मेरी है उमरिया

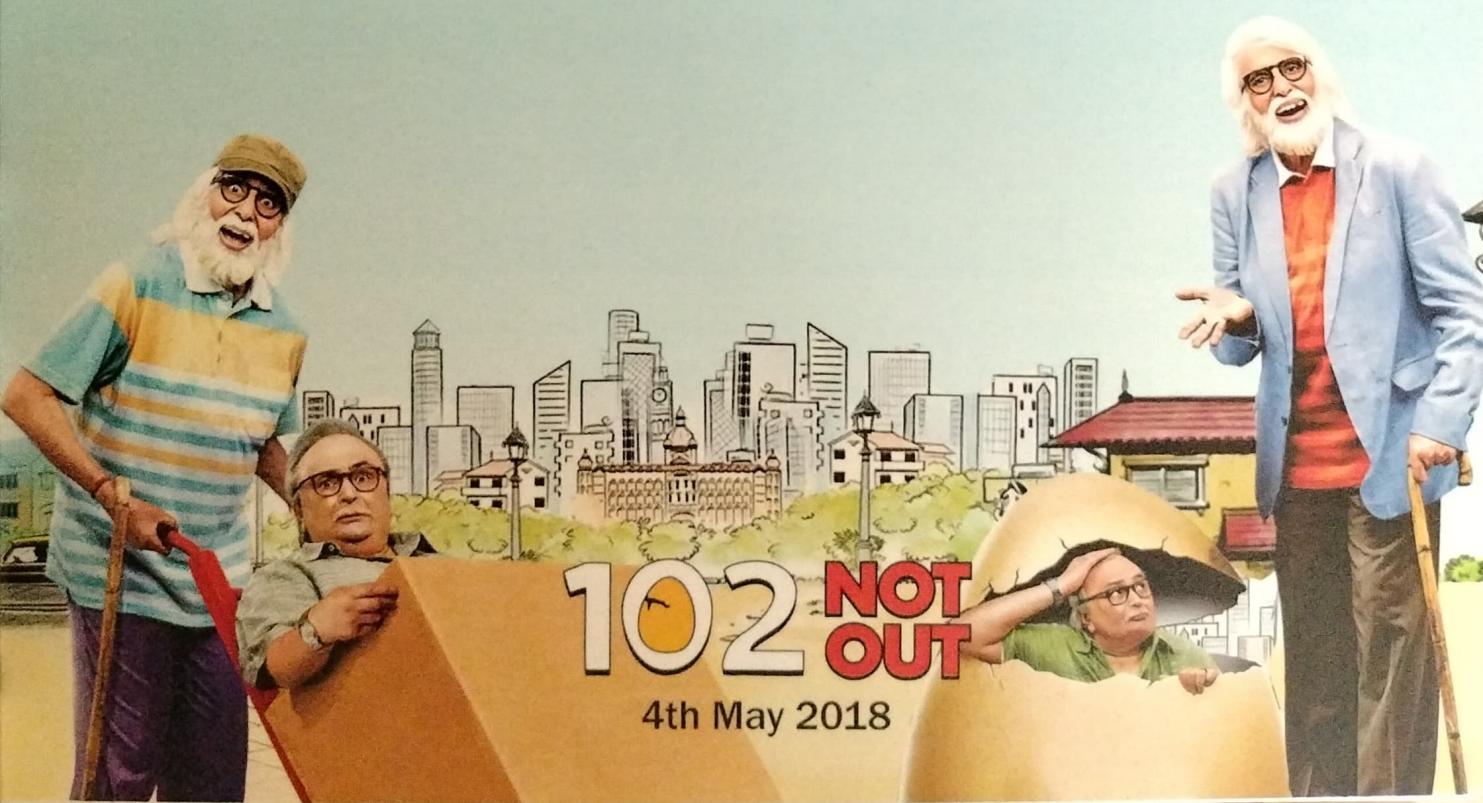
खींच खींच के साँस तू खत्म कर देगा सब हवा लगता मँझे
मेरे होते हुये क्यों पकड़ ली है तूने बुढ़ापे की डगरिया

कभी ये मशिकल कभी वो, मशिकलों से घिरा क्यों है तू
लेने हैं जो मँझे तुझे तो आ जा तू एक बार मेरी नगरिया

है अकेला तू इसलिये है परेशान, नहीं कोई अरमान तेरा
कर मोहब्बत किसी से तू, बन जा किसी का साँवरिया

क्यों पड़ा है चक्कर में तू इन कड़वी कड़वी दवाइयों के
कभी तो चख के देख तू ज़िन्दगी की खट्टी मीठी इमलियाँ

क्यों मेरे नज़रिये से जदा है तेरा नज़रिया
तू कहाँ हुआ है बुड़ा अभी, बुड़ा होने की मेरी है उमरिया



बाप फ़िट बेटा खिटखिट

मैं १०२ साल का जवान, तू ७५ साल का मैं तुझे बुझा नहीं मान सकता
हर मर्ज़ का इलाज मेरे तजुर्बे के पास है बीमारी क्या तेरी मैं क्यों नहीं जान सकता
बेटा तू है बेटा मेरा, मैंने किया है पैदा तज्ज्ञको, खिलाया, सुलाया मैंने, बाप हूँ तेरा
किस किस बात से होता खुश और किस बात से दुखी तू क्या मैं नहीं जान सकता
कर वैसा जैसा जैसा मैं कहता हूँ ज़िन्दगी तेरी बदल जायेगी नई सुबह आयेगी
अच्छे अच्छे कर दिये सीधे मैंने फिर क्यों तू नहीं, बात मेरी क्यों नहीं मान सकता
बढ़ापा बढ़ापा बढ़ापा तंग आ गया हूँ मैं तेरे इस बढ़ापे से और इसे अपनाने से
ज़िन्दगी है जीने के लिये न कि मरने के लिये तू ये बात मेरी क्यों नहीं मान सकता
काश तू बच्चा होता तो ज्यादा अच्छा होता क्योंकि तुझे समझाना होता आसान
क्या है अच्छा तेरे लिये और क्या है बुरा यहाँ क्यों तू ये बात नहीं पहचान सकता

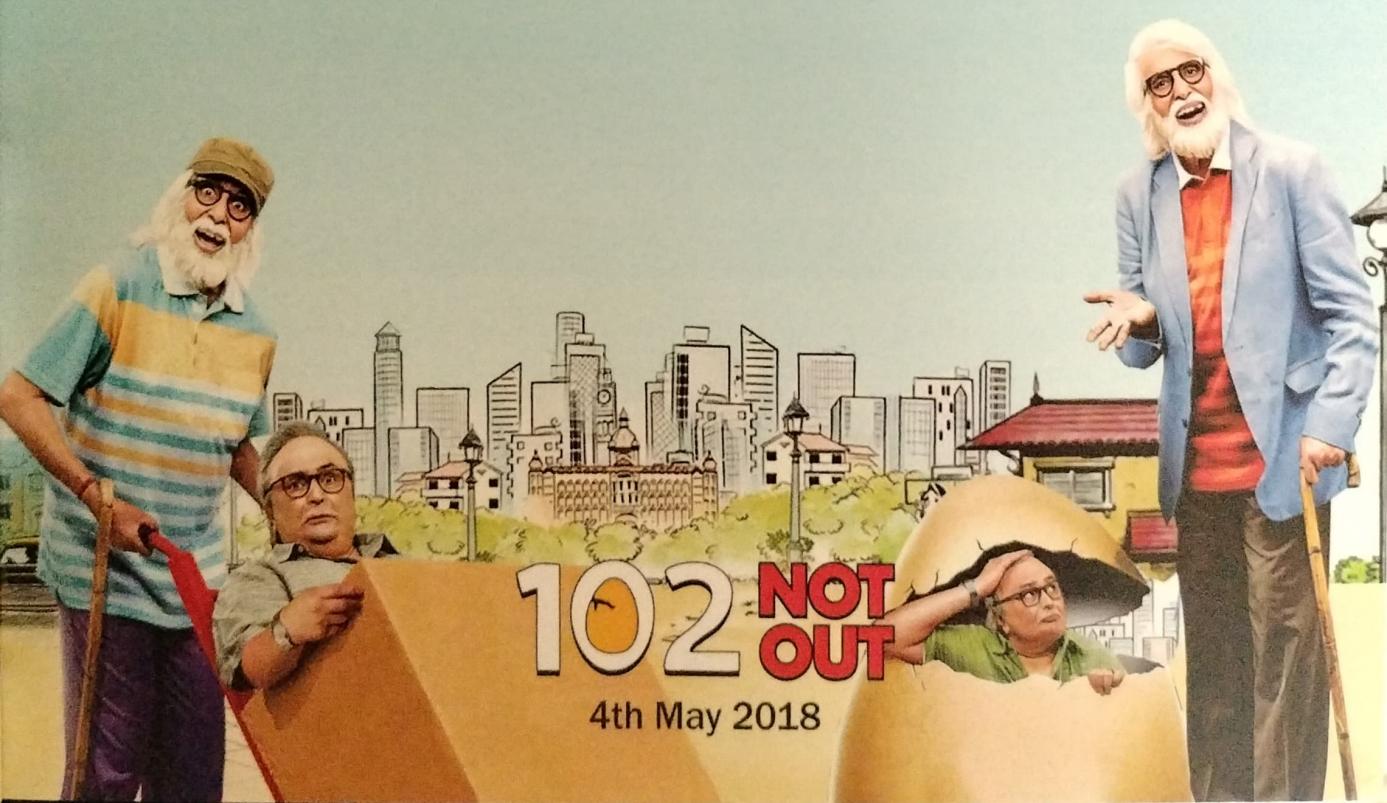


102 NOT
OUT

4th May 2018

नियम है, दस्तूर है, सिलसिला है बुढ़ापा

नियम है, दस्तूर है, सिलसिला है बुढ़ापा तो आना है
खनी हैं उमर्गें, दिल को बस बूढ़ा होने से बचाना है
करना नहीं अफ़सोस बुढ़ापे का, पल पल लेना है मज़ा
बजाना है संगीत, झूमना, नाचना, खेलना, गाना गाना है
क्या काम है जो मैं नहीं कर सकता बताओ तो ज़रा तम
फुटबॉल पर मारनी है लात और मुँह से बाजा भी बजाना है
बुढ़ापा है तज़रबा यूँ ही नहीं मिलता करना पड़ता जतन
मजबूरी है अपनी उम्र से कम के बेटे को ये समझाना है
कर्सँगा मैं सब वो जो भी करना पड़े मझे उसकी खातिर
बनकर बच्चा, दिखाकर बचपन बेटे को अपने हँसाना है
नहीं समझता है जो वो नासमझ है करें कछ उपाय
हूँ मैं मजबूर बाप बेटे को अब वृद्धाश्रम मुझे पहुँचाना है
नियम है, दस्तूर है, सिलसिला है बुढ़ापा तो आना है
खनी हैं उमर्गें, दिल को बस बूढ़ा होने से बचाना है

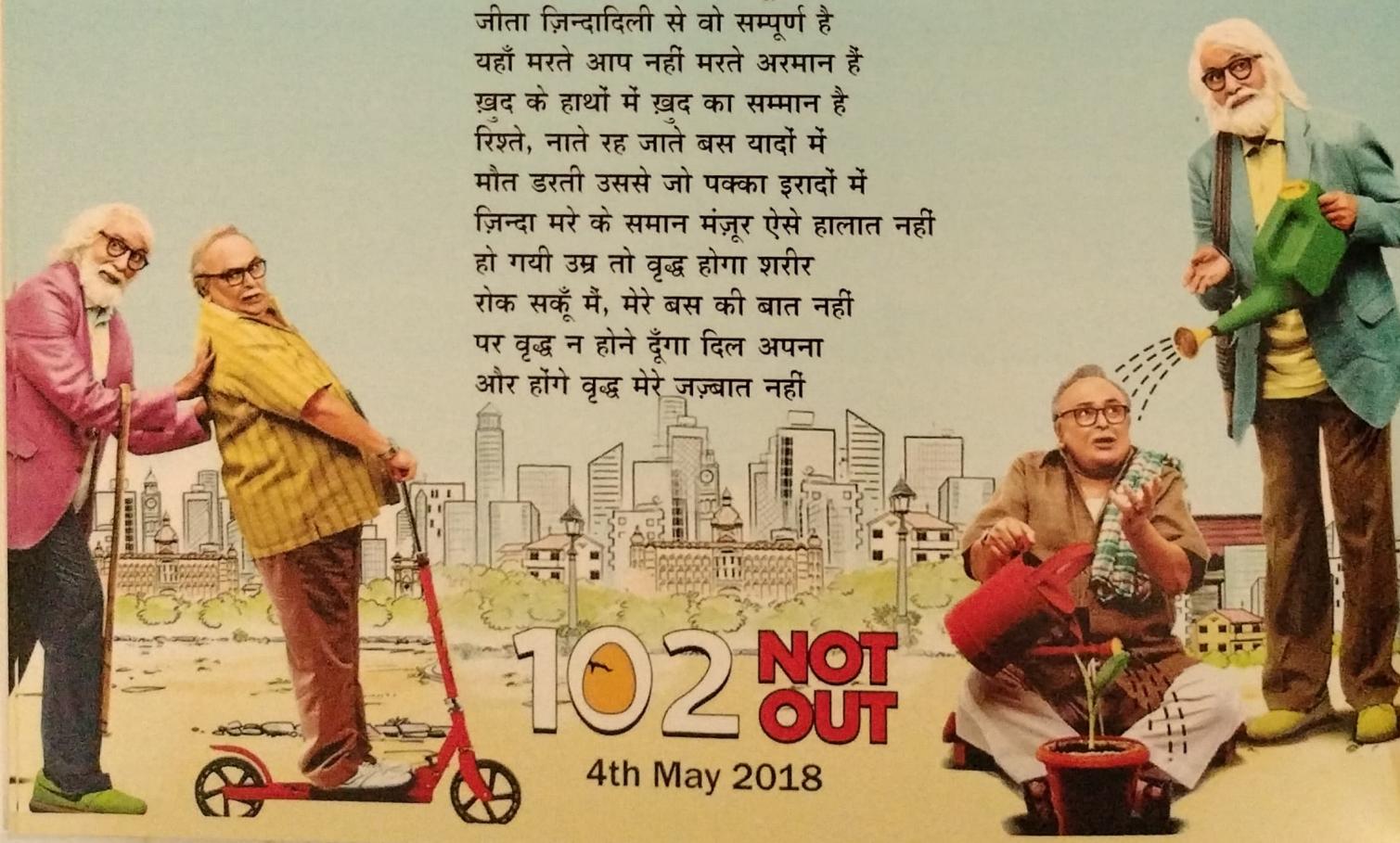


शरीर वृद्ध दिल जवान

हो गई उम्र तो वृद्ध होगा शरीर
रोक सकूँ मैं, मेरे बस की बात नहीं
पर वृद्ध न होने दूँगा दिल अपना
और होंगे वृद्ध मेरे जज्बात नहीं

खेल खेले बचपन में बहुत मैंने
खेल रही ज़िन्दगी अब जानता हूँ
पता नहीं कौन मानता मुझको अपना
पर मैं सबको अपना मानता हूँ
सफेद बाल, चश्मा, हाथों में छड़ी
सब दोस्त मेरे जिनका हाथ थामता हूँ
आज भी पा ही लेता मंज़िल अपनी
कर के ही मानता जो मैं ठानता हूँ
नज़रें भले ही कमज़ोर हो गई हों
पर अपनों को मैं पहचानता हूँ
दिन बहुत लम्बे, कटती रात नहीं
हो गयी उम्र तो वृद्ध होगा शरीर
रोक सकूँ मैं, मेरे बस की बात नहीं
पर वृद्ध न होने दूँगा दिल अपना
और होंगे वृद्ध मेरे जज्बात नहीं

प्यार, प्यार ही तो है जो बाँटना है
ज़िन्दगी जीना है न कि काटना है
हर पल ज़िन्दगी का महत्वपूर्ण है
जीता ज़िन्दादिली से वो सम्पूर्ण है
यहाँ मरते आप नहीं मरते अरमान हैं
ख़द के हाथों में ख़द का सम्मान है
रिंते, नाते रह जाते बस यादों में
मौत डरती उससे जो पक्का इरादों में
ज़िन्दा मरे के समान मंज़ूर ऐसे हालात नहीं
हो गयी उम्र तो वृद्ध होगा शरीर
रोक सकूँ मैं, मेरे बस की बात नहीं
पर वृद्ध न होने दूँगा दिल अपना
और होंगे वृद्ध मेरे जज्बात नहीं



102 NOT OUT

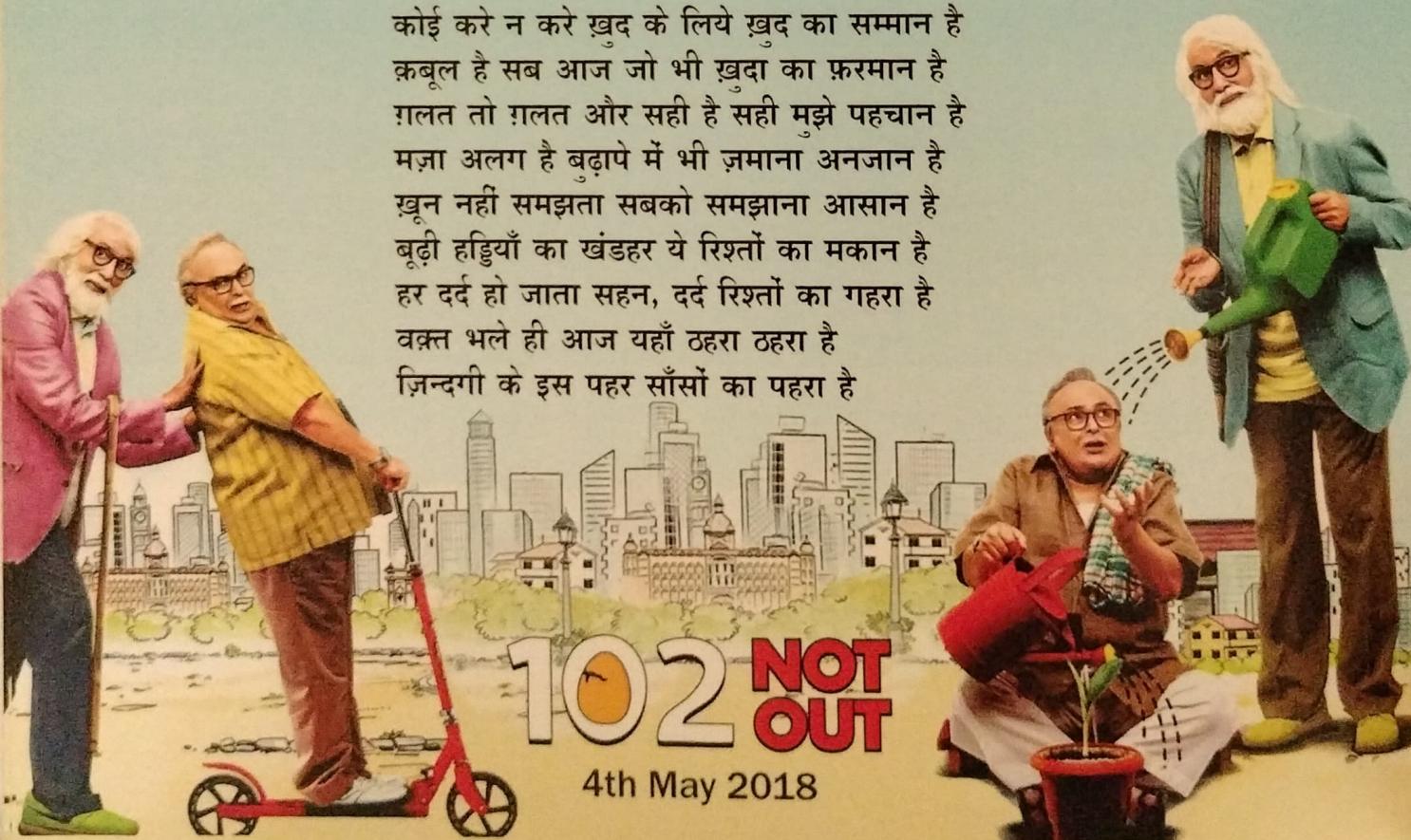
4th May 2018

साँसों के पहरे में ज़िन्दगी

वक्त भले ही आज यहाँ ठहरा ठहरा है
ज़िन्दगी के इस पहर साँसों का पहरा है
क्यों रहूँ अकेला मैं तन्हाई में
क्यों देखूँ खुद को चलता परछाई में
क्यों बनूँ पात्र मैं यहाँ जग हँसाई में
क्यों आँढ़ूँ चादर, पड़ा रहूँ रजाई में
क्यों रहूँ असमंजस की कम्हलाई में
क्यों रहूँ असहज मैं रिश्तों की गरमाई में
मसकराता झरियाँ लिये, रंग ज़िन्दगी का सुनहरा है
वक्त भले ही आज यहाँ ठहरा ठहरा है
ज़िन्दगी के इस पहर साँसों का पहरा है

झकी है कमर, जर्जरता, त्वचा झुरियों में नहाई है
उम्र भले ही बीत रही पर जीने की बारी आई है
मिली है लाठी चलने को नयी सवारी आई है
खिलें हैं गल कई ब़रीचों में नयी फलवारी आई है
मदमस्त हूँ मैं खुद में कौन कहता लाचारी आई है
ज़िंदादिल, जवान दिल अभी, कहाँ खमारी आई है
सही हूँ फिर भी ग़लत हूँ, ये बुढ़ापे की परम्परा है
वक्त भले ही आज यहाँ ठहरा ठहरा है
ज़िन्दगी के इस पहर साँसों का पहरा है

कोई करे न करे खुद के लिये खुद का सम्मान है
क्रबूल है सब आज जो भी खुदा का फरमान है
ग़लत तो ग़लत और सही है सही मुझे पहचान है
मज़ा अलग है बुढ़ापे में भी ज़माना अनजान है
खून नहीं समझता सबको समझाना आसान है
बूढ़ी हड्डियाँ का खंडहर ये रिश्तों का मकान है
हर दर्द हो जाता सहन, दर्द रिश्तों का गहरा है
वक्त भले ही आज यहाँ ठहरा ठहरा है
ज़िन्दगी के इस पहर साँसों का पहरा है



102 NOT OUT

4th May 2018

बाप उम्रदराज बेटा लाइलाज

हाँ उम्रदराज हूँ मैं, हाँ उम्रदराज हूँ मैं
बचपन, जवानी, बुढ़ापा, रिवाज हूँ मैं

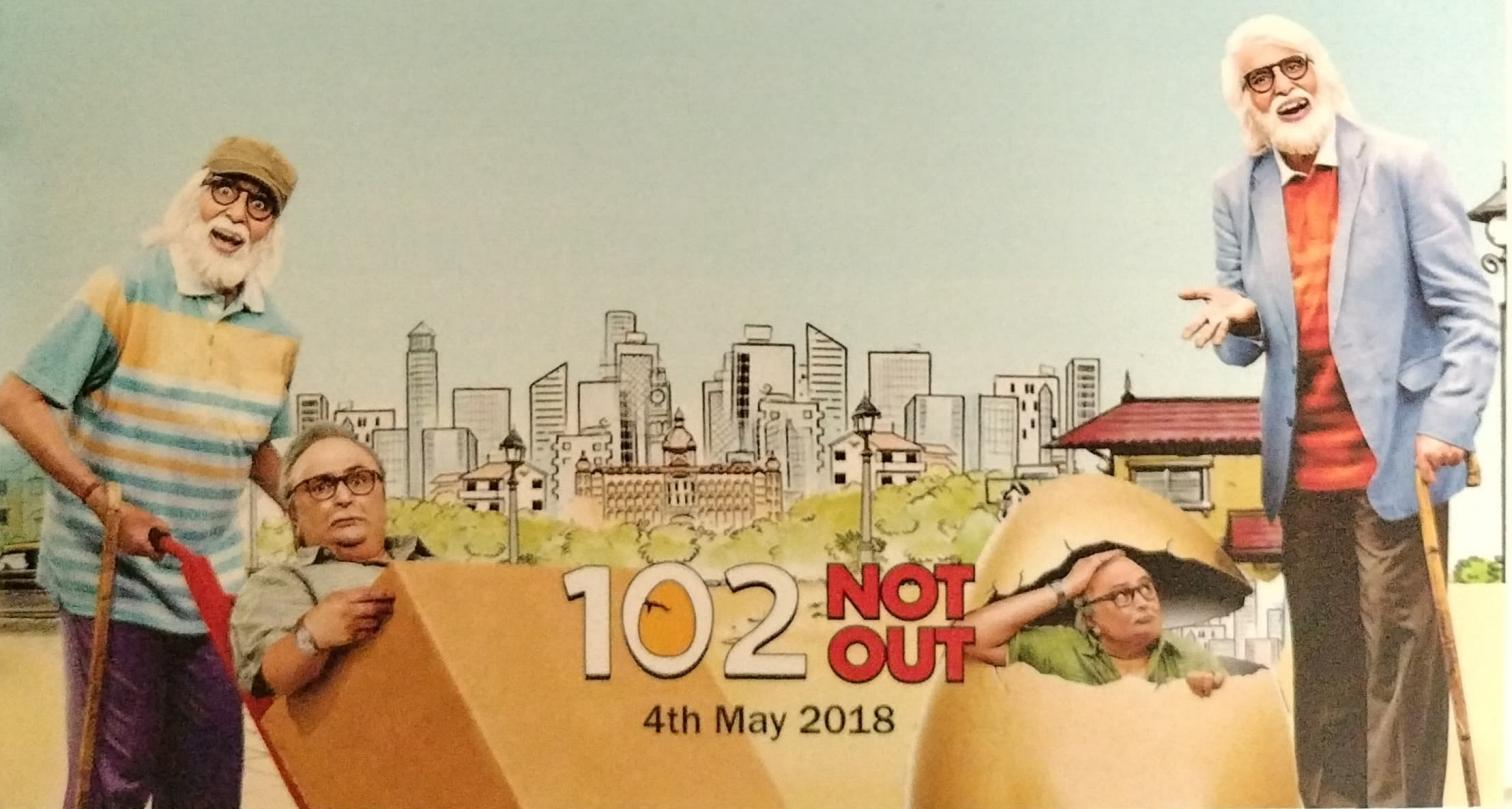
मैं हूँ सीख, मैं तज़्बा, विचार हूँ मैं
प्यार के लिये जीता, ज़िंदा आज हूँ मैं

भूत साथ मेरे चलता, भविष्य मालूम नहीं
वर्तमान से लड़ता ग़ज़ब अंदाज हूँ मैं

जीने की तमन्ना है, ज़ज्बा है, हौसला है
जानना चाहते सब मुझे वो राज हूँ मैं

दूँगा सुकूँ तुम्हें, और चैन भी, प्यार भी
सुनाता स्वर मधर सबको वो साज हूँ मैं

हाँ उम्रदराज हूँ मैं, हाँ उम्रदराज हूँ मैं
बचपन, जवानी, बुढ़ापा, रिवाज हूँ मैं



102 NOT
OUT

4th May 2018

जान है तो मुरकान है

ज़िन्दगी नहीं हुई पूरी जान बाकी है
जीने हैं कुछ लम्हे, अरमान बाकी है

समझता नहीं कोई सब बस उलझते
बूढ़ी हो चुकी हड्डियों में सम्मान बाकी है

रिश्ते नाते बहुत बनाये, निभाये हमने
जानते हैं सब मुझे मेरी पहचान बाकी है

मैंने चलना सिखाया था जिसे वो मेरा है
चुकाना चाहता कहता अहसान बाकी है

होता वो ही जो वो चाहता है ऊपर वाला
आया नहीं समय उसका फ्रमान बाकी है

दिक्कत चलने में भले हो पर चलना चाहता
गालों पर पड़ी झुर्रियों में मुसकान बाकी है

पूरा हुआ जब शतक तो हये सब नतमस्तक
आप हैं मेज़बान आने कई मेहमान बाकी हैं

ये शरीर कहाँ है मेरा, विरासत है किसी और की
चलेगा झगड़ा होना साँसों से घमासान बाकी है

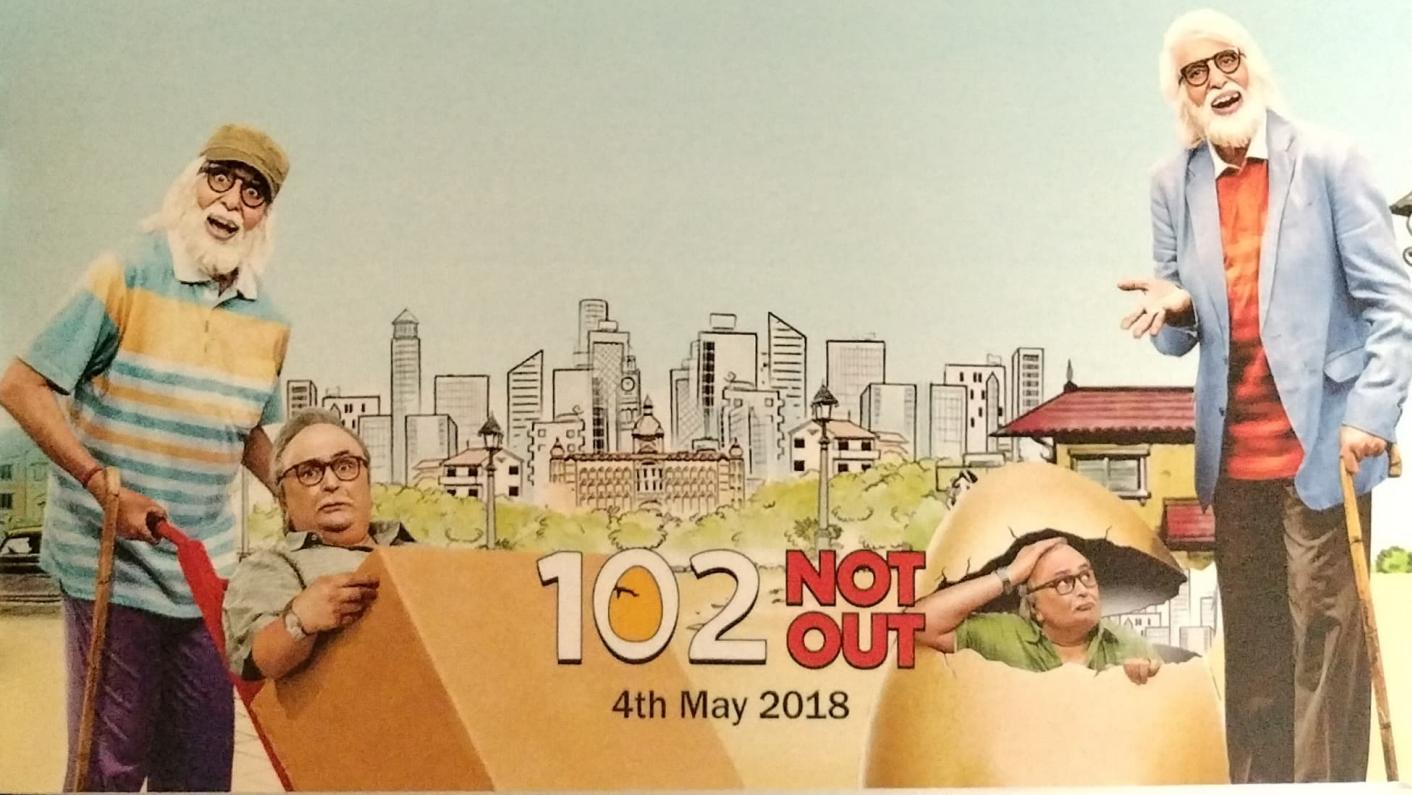
हास्या नहीं मैं अभी आउट होना नहीं चाहता
खेलनी है लम्बी पारी अभी मैदान बाकी है

102 NOT OUT

4th May 2018

ये अंडा टूटता क्यों नहीं है

फिर ज़िन्दगी में आ गया हमारी ये अंडा
टूटता नहीं थक गये मार मार हम सब डंडा
क्या निकलेगा इसमें उत्सक मैं और आप
बेटा निकलेगा या फिर निकलेगा बाप
आज सबको आपने काम पर लगा दिया
हर बार करते नया ये सबको दिखा दिया
बढ़ता जा रहा इंतज़ार पर ये टूटता नहीं
पर हम कहाँ मानने वाले मोह छूटता नहीं
कछ है इसमें जो हमारी समझ से परे है
जीतेगा वो हौसलों से जो डर से परे है
बेटा बाप को कर रहा परेशान जानते हैं
पर कर लेते हम भी जो करने की ठानते हैं
जल्दी आ जायेगा समझ हमें अंडे का फ़ंडा
फिर ज़िन्दगी में आ गया हमारी ये अंडा
टूटता नहीं थक गये मार मार हम सब डंडा



बाप हरा मरा बेटा डरा डरा

बूढ़ी हो चकी हड्डियाँ, गालों पर पड़ चकी झुर्रियाँ
सफेद हो चके बाल, लटक चुके हैं मेरे गाल
रखा हआ है शौक ज़िन्दगी का, अभी मैं मरा नहीं
देखो बेटा मेरा डर गया उम्र से, अभी मैं डरा नहीं

क्या करूँ, क्या करूँ कैसे समझाऊँ, कैसे मनाऊँ
ज़िन्दगी है जीने के लिये कैसे बात ये उसे मैं बतलाऊँ
सोचता है छोड़ दूँ अकेला उसे, कैसे उससे मैं दूर हो जाऊँ
या जाके अब खद उसे किसी वृद्ध आश्रम में छोड़ आऊँ
बेजान सी कर ली ज़िन्दगी क्यों कोई उसने रंग भरा नहीं
देखो बेटा मेरा डर गया उम्र से, अभी मैं डरा नहीं

बाप बाप है बेटा बेटा, बाप cool बेटा old school
समझ से परे बेटा बाप के, कर रहा रोज़ नई भूल
नाचते, गाते, खेलते कूदते वो करता नहीं ज़िन्दगी को क़बूल
बाप अब बेटे को समझाने निकला है ज़िन्दगी के असूल

ज़िन्दगी उसकी नीरस रंग उसमें लाल, पीला, नीला, हरा नहीं
देखो बेटा मेरा डर गया उम्र से अभी मैं डरा नहीं



102 NOT OUT

4th May 2018

बच्चे की जान लोगे क्या?

उम्र का ये पड़ाव, पड़ रहा उलटा हर दाँव
ऊपर से आपके ये अरमान
कह रहे बात मेरी मान
कोई और कहेगा तो आप मान लोगे क्या?

बच्चे की जान लोगे क्या?

घट घट के क्यों मरुँ मैं
साँस न खींचूँ तो क्या करुँ मैं
आपके फरमानों से भला क्यों डुरुँ मैं
न मानूँगा तो कोई नया सुर तान लोगे क्या?

बच्चे की जान लोगे क्या?

आप के मेरे बीच वो बात न रही
आप अपनी जगह सही और मैं अपनी जगह सही
दिमाग़ा का सुबह शाम कर रखा है दही
मुझे वृद्ध आश्रम में छोड़ने की ठान लोगे क्या?

बच्चे की जान लोगे क्या?

मोहब्बत का पाठ पढ़ाते
कैसे बाप बेटे से प्रेम पत्र लिखवाते
बात बात में बच्चे के काम में टाँग अड़ाते
अब अपनी हरकतों से आराम लोगे क्या?

बच्चे की जान लोगे क्या?



102 **NOT**
OUT

4th May 2018

बाप जवान बेटा परेशान

हैं आप उम्रदराज़, मेरे बाप,
भूल गये क्यों कि इस घर में आपका एक बच्चा भी है
बैचेन रातें, खीचता साँसें,
कह देता वो सब कुछ सच सच बहुत सच्चा भी है
है आपको तजुर्बा, पर मैं नादान नहीं,
पकते पकते फल पकता अभी थोड़ा वो कच्चा भी है
सब कुछ ग़लत, ऐसा तो नहीं,
कभी कभी हम दोनों के बीच होता कुछ अच्छा भी है
खेल कूद नहीं भाता, जान ले रहा बढ़ापा,
कहाँ जाऊँ किस ओर चलूँ बचा कोई मेरे लिये रस्ता भी है
याद नहीं बचपन, काम में नहीं मन,
मुझे कुछ याद नहीं पास आपके मेरी सब यादों का बस्ता भी है
हैं आप उम्रदराज़, मेरे बाप,
भूल गये क्यों कि इस घर में आपका एक बच्चा भी है



बाप बिंदास बेटा खल्लास

बुढ़ापा है गर पहेली तो तू बूझ पहेलियाँ
नाच, गा, झूम और कर तू अठखेलियाँ

तू क्यों घूम रहा काँटों के जंगल में तन्हा
क्यों दिखते नहीं तुझे फूल और तितलियाँ

लिख प्यार भरे ख़त किसी हसीना को
कुछ तू दोस्त बना, बना कुछ सहेलियाँ

झर्रियाँ भले गालों पर, अरमान न हों ढीले
पीछे पीछे तू दौड़ आगे तेरे दौड़े गिलहरियाँ

बुढ़ापा विरासत है इसे रुकावट मत मान
अभी भी तू कर सकता है अपनी मनमर्जियाँ

चल, उठ, खड़ा हो जा दिखा ज़िन्दगी जी कर
तेरे आगे पीछे घूम घूम लगा रहे हम अर्जियाँ

बुढ़ापा है गर पहेली तो तू बूझ पहेलियाँ
नाच, गा, झूम और कर तू अठखेलियाँ



102 NOT
OUT

4th May 2018

बाप New Fashion बेटा Old Tension

बेटा मेरे तू अब तो बड़ा हो जा, बड़ा हो जा
कंधे पर नहीं मेरे, अब ज़मीन पर खड़ा हो जा

किसी ग़लतफ़हमी को न जकड़े रहना
ज़स्त हो तो हाथ मेरा तू पकड़े रहना
जिस दिन वास्तव में खुद बड़ा हो जायेगा
उस दिन जश्न ये तेरा बुझा बाप मनायेगा
मैं हूँ ज़िंदादिल, मत बन तू बुज़दिल मुम्भा
तुझे देखूँ मैं हँसते खेलते बस ये है तमन्ना

न कभी पूरी होने वाली ख़्वाहिशों से भरा घड़ा हो जा

बेटा मेरे तू अब तो बड़ा हो जा, बड़ा हो जा
कंधे पर नहीं मेरे, अब ज़मीन पर खड़ा हो जा

दनिया देखती जो मझे भी अब वो नज़ारा चाहिये
मैं दे रहा तझे जबकि मुझे अब तेरा सहारा चाहिये
बेटा देख मैं नाच रहा, गा रहा, खुद अपने पैरों पर खड़ा हूँ
तू बहुत है छोटा मत कर चिंता मैं तुझसे बहुत बड़ा हूँ
है मेरे पास तू, मत हो उदास तू, बन जा ख़शी का अहसास तू
ज़िंदा है तू, बता तू सबको, जीत ले ज़िन्दगी का विश्वास तू

कमज़ोर बनके काम नहीं चलेगा, अब तू तगड़ा हो जा

बेटा मेरे तू अब तो बड़ा हो जा, बड़ा हो जा
कंधे पर नहीं मेरे, अब ज़मीन पर खड़ा हो जा

102 NOT OUT

4th May 2018

बाप Always Trying बेटा Always Crying

बेटे मेरे तू चिंताओं से अपनी निकल जा
मान बात मेरी जी ज़िन्दगी अपनी तू सँभल जा

मुझे समझाना चाहिये तुझे पर समझा रहा हूँ मैं तुझे
बजा बाजा, गा गाना, नाच के दिखा थोड़ा उछल जा

ज़माने की नज़र तझ पर है और मेरी भी नज़र है यहाँ
कोशिशों को मेरी कर दे कामयाब तू अब बदल जा

दे दे साथ मेरा तू कर दे पूरी मेरी बस एक ख़्वाहिश
मिला ले क्रदम से क्रदम मेरे साथ तू भी थोड़ा चल जा

फैला खुशबू अपनी तू कि ज़माना ये महक जाये
बन जा अहसास खूबसूरत तो बन कर फूल खिल जा

कैसे कटेगी ज़िन्दगी ये मेरी जो होगा न साथ मेरे तू
अधेड़ हूँ मैं, तजुब्बों का पेड़ हूँ मैं, बन मेरा तू फल जा

बेटे मेरे, बेटे मेरे तू चिंताओं से अपनी निकल जा
मान बात मेरी जी ज़िन्दगी अपनी तू सँभल जा



102 NOT
OUT

4th May 2018

आफत में बच्चे की जान

१०२ साल का बाप, ज्यादा जीने का अरमान है,
पता नहीं उसको यहाँ आफत में उसके बच्चे की जान है

वो बन रहा बच्चा कर रहा खेल,
बच्चा उसका बूढ़ा हर इमिहान में फेल,
तलवारें हैं दो पर एक मियान है

कैसे करे कोई अब प्यार,
लिखा नहीं जाता खत होता नहीं इजहार
दिल के मेरे हालातों से बाप मेरा अनजान है

कभी डराता है वो, कभी स्लाता है वो,
पर कहाँ बाप का कोई फ़र्ज़ निभाता है वो
कर रखा मुझे परेशान है

मुझे आ गया बढ़ापा तो क्या मैं करूँ
क्यों बाप की हाँ मैं हाँ मैं भरूँ
बाप वो मेरा भले हो पर मेरी भी अपनी पहचान है

अपने इरादों का पक्का, कर रखा है मुझे हक्का बक्का,
खेले वो मारे छक्का,
बनाना चाहता कोई कीर्तिमान है

१०२ साल का बाप, और ज्यादा जीने का अरमान है,
पता नहीं उसको यहाँ आफत में उसके बच्चे की जान है

102 NOT OUT

4th May 2018

गुब्बारे जैसी ज़िन्दगी

गुब्बारे जैसी ज़िन्दगी बैठा क्यों है तू गुब्बारे सा फूला फूला
आ जा बेटा मान बात मेरी करा दूँ मज़े तुझे झुला दूँ झुला
कर प्यार कर, मत इंकार कर, चाहतों के साथ बन जा दूल्हा
मत लड़ मुझसे बन जा दोस्त मेरा मत कर गंदी तू अपनी जिहवा

कहने को तो गुब्बारा होता बहुत छोटा पर फूल कर देता मज़ा
भर खुब हवा तू भी अंदर अपने और ले ले ज़िन्दगी का पूरा मज़ा
न बैठ यूँ गुमसम बच्चे मेरे न कर अत्याचार खुद पे न दे मुझे सज़ा
चलते हैं साथ हम दोनों करते हैं वो ही जो है एक दूजे की अब रज़ा

भरती हवा गुब्बारे में तो वो उड़ता जाता बनाता नये कीर्तिमान
क्यों नहीं दे सकता करने तू पूरा मेरा सबसे ज़्यादा जीने का अरमान
मेरा अंश है तू, वंश है तू बन जा मेरे जैसा बना ले अपनी तू पहचान
बड़ा बन, मत बन बच्चा तू, कच्चा तू, गा रहा लोगे क्या बच्चे की जान

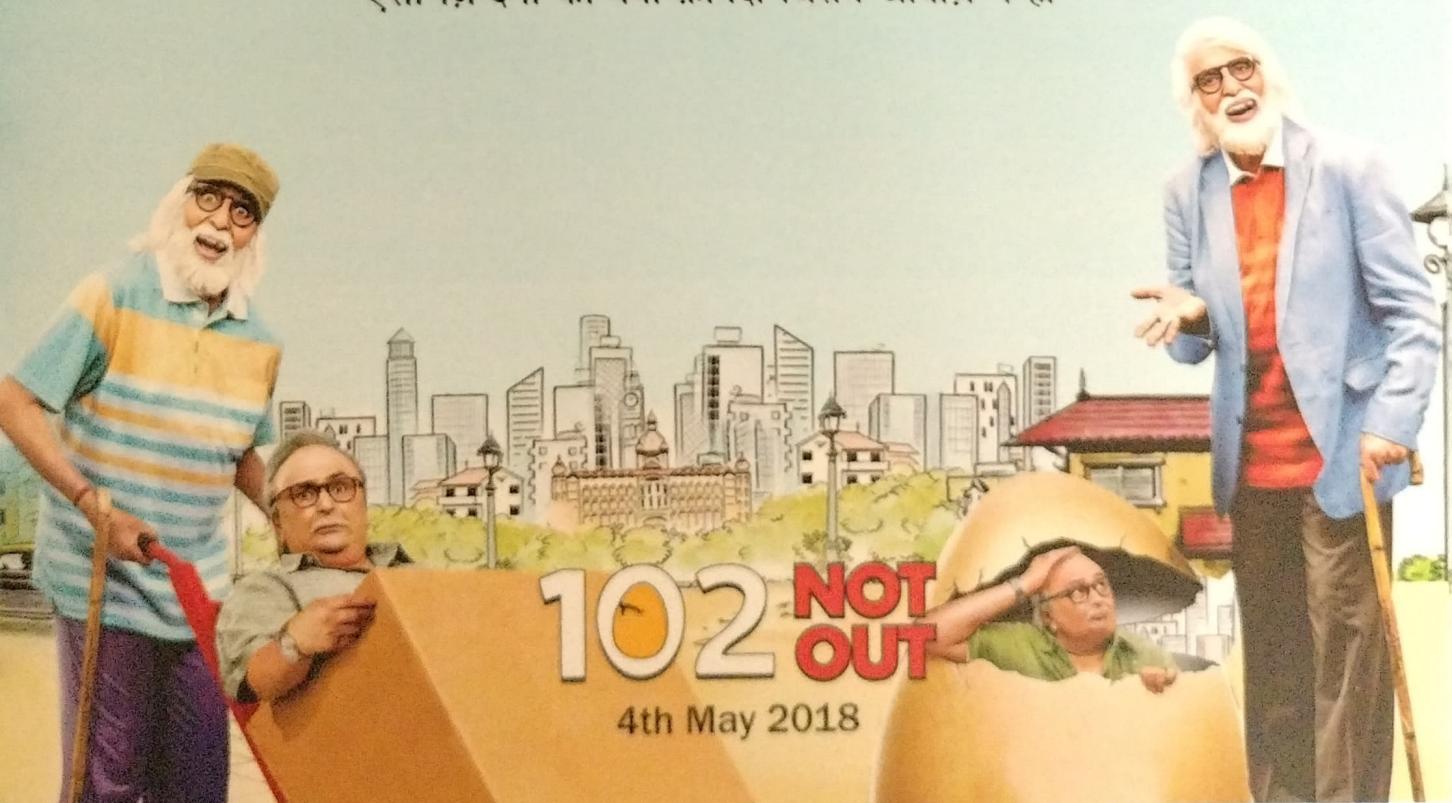


102 NOT OUT

4th May 2018

बाप रहे डट के बेटा ज़रा हट के

उम्र हो भले ही उम्रदराज़ पर ज़ज्बा उम्रदराज़ न हो
बाप हो बूढ़ा पर बच्चों के बूढ़े होने का रिवाज न हो
ज़िन्दगी मिली है हँसने, नाचने और गुनगुनाने के लिये
ऐसी ज़िन्दगी का क्या फ़ायदा जिसमें आवाज न हो
माँ बाप के लिये बच्चे हमेशा बच्चे ही हैं रहते यहाँ
पर बच्चे भी रहें बच्चे उनका बाप जैसा अंदाज़ न हो
उम्र तो बढ़ती जाती, चलती जाती, स्कती नहीं है
स्वीकार करना बुढ़ापा अच्छा पर बुरे हालात न हों
बेटा माँ बाप के लिये बने सहारा न रहे वो बेसहारा
बचपन रखे याद बाप पर जवानी उसकी याद न हो
कछ भी करे बाप तो कोशिश करेगा मरते दम तक
न दूरियाँ रिश्तों में और ज़ुबान में कड़वाहट न हो
उम्र हो भले ही उम्रदराज़ पर ज़ज्बा उम्रदराज़ न हो
बाप हो बूढ़ा पर बच्चों के बूढ़े होने का रिवाज न हो
ज़िन्दगी मिली है हँसने, नाचने और गुनगुनाने के लिये
ऐसी ज़िन्दगी का क्या फ़ायदा जिसमें आवाज न हो



102 **NOT**
OUT

4th May 2018

बाप ज़िंदादिल बेटा बड़ी मुश्किल

बेटा मिली है ज़िन्दगी तो ज़िन्दादिल बन
न पैदा कर मुश्किलें अब न तू मुश्किल बन

पीछे पीछे आयेगी साँसें तेरे बात मेरी मान
मिलने को तरसे वो तुझे तू इतना क्राबिल बन

मैं हूँ तुझसे बड़ा और रखता हूँ तजुर्बा बड़ा
न मार खुद को तू, न तू खुद का क्रातिल बन

मँझधार में फँस कर बचना हो जाता मुश्किल
बचा तू खुद को, तू खुद का अब साहिल बन

दिल लगा तू ज़िन्दगी से कर प्यार की बातें
न मँह मोड़ तू ज़िन्दगी से, न तू संगदिल बन

बाप और बेटा हो जाएँ दुश्मन तो जियेंगे कैसे
बनाना चाहता मैं दोस्त, दोस्त तू फ़ाज़िल बन

बेटा मिली है ज़िन्दगी तो ज़िन्दादिल बन
न पैदा कर मुश्किलें अब न तू मुश्किल बन



102 NOT OUT

4th May 2018

बाप बेमिसाल बेटा सवाल

जिसका न मिले जवाब मत वो तू सवाल बन
लोग करें बातें तेरी तू इतना बेमिसाल बन

मत रह उदास उदास और तू परेशान इस कंदर
नाच गा ऐसे कि काँपे धरती तू वो भूचाल बन

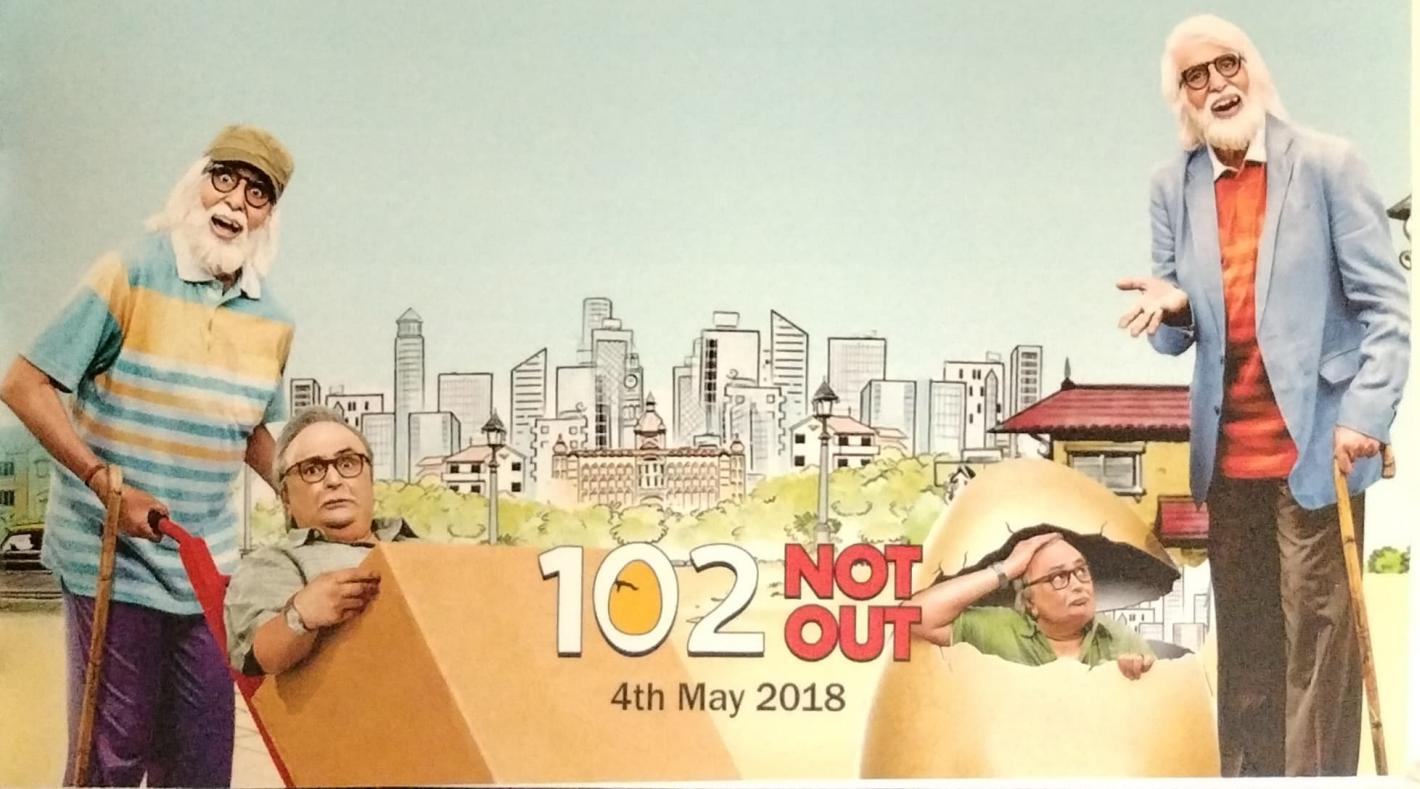
ज़माने की नज़र तझे पर है मत झुका नज़र तू
ज़माना चले तेरे पीछे पीछे तू वो मस्त चाल बन

मैं क्यों बचाऊँ तुझे, छपाऊँ तुझे, समझाऊँ तुझे
बन मेरा सहारा तू और अब तू मेरी ढाल बन

पक चुका हूँ मैं तेरा बेसरा राग सुन सुन कर
पैदा करे कुछ मधुर जुबाँ में तू वो सुर ताल बन

बुढ़ापा, बुढ़ापा क्या है बुढ़ापा सोच है बुढ़ापा
मत छोड़ बचपना तू, बचपन वाला हसीं ख्याल बन

जिसका न मिले जवाब मत वो तू सवाल बन
लोग करें बातें तेरी तू इतना बेमिसाल बन



बाप उम्रदराज़ बेटा पुराना रिवाज

मैं पक चका पर अभी तक है कच्चा तू
मैं वृद्ध हो चुका पर अभी तक है बच्चा तू

क्यों उलझ रहा है ज़िन्दगी से सुलझ जा
सब ले रहे मज़ा यहाँ पर खा रहा गच्छा तू

झूठ बालते हैं सब और तू कर लेता विश्वास
सच समझ तू, सच मान कर बन जा सच्चा तू

बूढ़ा हूँ मैं और अब देखा नहीं जाता हाल तेरा
अच्छी बातों को अपना कर बन जा अच्छा तू

छोड़ दे डरना ज़रा ज़रा सी बातों से अब तू
बदल ले हुलिया अपना और बदल नक्शा तू

जिस राह पर मैं चलाना चाहता तू चलता नहीं
बदल जायेगा अगर बदल लेगा अपना रस्ता तू

मैं पक चका पर अभी तक है कच्चा तू
मैं वृद्ध हो चुका पर अभी तक है बच्चा तू



102 NOT OUT

4th May 2018

बाप की उमंग बेटा को करे तंग

अरमानों के आसमानों में उड़ रही हौसलों की पतंग है
बाप बेटा बन गये बेटा बाप घर में छिड़ी हुई आज जंग है

कुछ भी करने से बहुत डरता है वो पल पल मरता है वो
कर चुका स्वीकार वो बुढ़ापा कर चुका ख़त्म वो अपनी हर उमंग है

ज़िन्दगी मेरी रंगीन भरी भरी है रंगो से उमंगों से बहुत ज़्यादा
नीरस, वीरान ज़िन्दगी जी रहा बेटा जिसमें न कोई रंग है

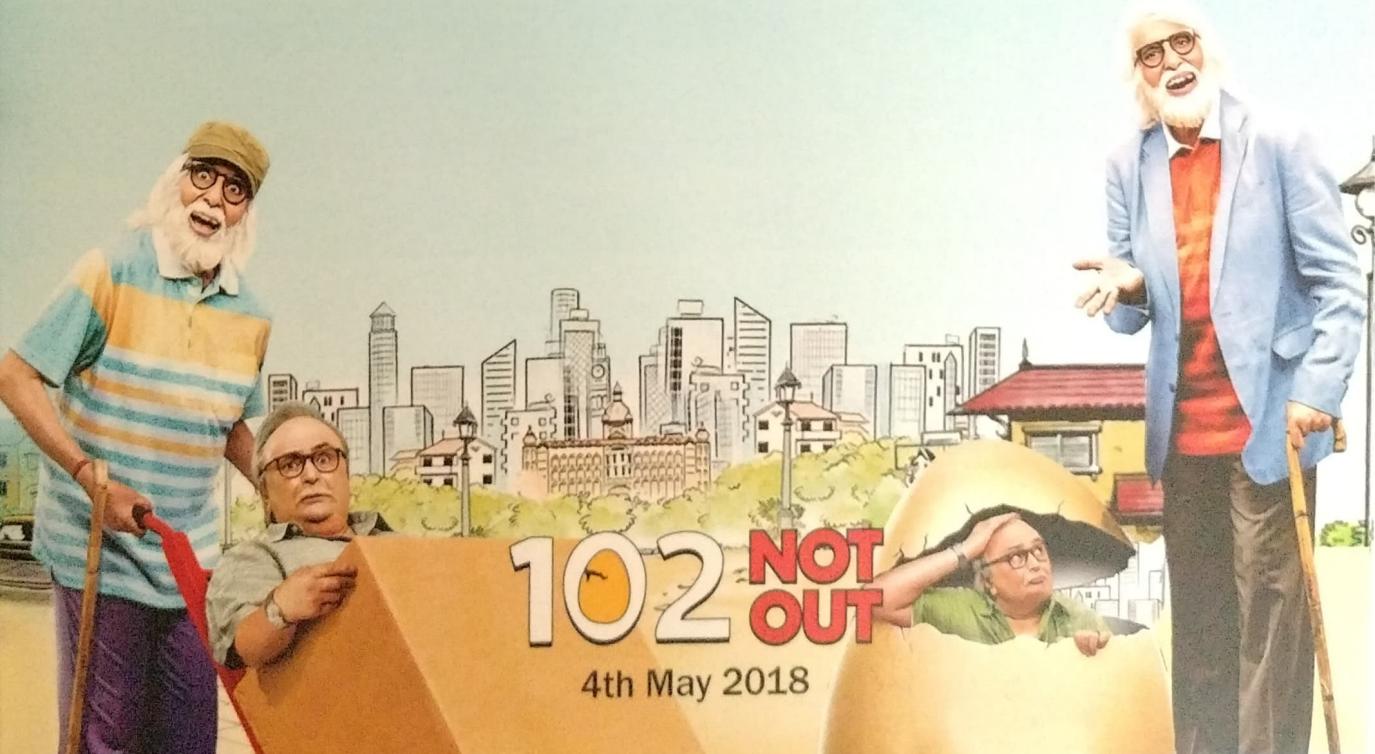
खुश होना है आसान बहुत जानता नहीं वो मानता नहीं वो
दुख लगाये गले, खुशियों के लिये हाथ उसका बहुत तंग है

उम्रदराज हूँ मैं, खुशियों का रिवाज हूँ मैं, लाजवाब हूँ मैं
निराश है वो, उदास है वो, जीने का न कोई क्रायदा न ढंग है

बचपन करता याद तो झूम उठता जवानी भी थी ग़ज़ब उसकी
बुड़े बाप को बताये बेटा बुढ़ापा ज़माना देख ये नज़ारा दंग है

क्या क्या सोचा था पर हो रहा क्या से क्या मालूम नहीं म़झे
वो ही बाप खुशनसीब जिसके साथ चले बेटा उसके संग संग है

अरमानों के आसमानों में उड़ रही हौसलों की पतंग है
बाप बेटा बन गये बेटा बाप घर में छिड़ी हुई आज जंग है



बाप का सिपाया बेटा का बुढ़ापा

बाप है परेशान कि बेटे ने बुढ़ापा कर लिया स्वीकार
बदल गया है जीवन उसका बदला बदला है व्यवहार

बाप चाहे कि भूल बुढ़ापा बेटा ज़िन्दगी जीने की रखे तमन्ना
बेटा करता क्या देखने को ये रहना पड़ता बाप को चौकन्ना

कभी ये बीमारी कभी वो काम आती नहीं अब कोई भी दवा
कमी हो न जाये हमारे लिये बेटा खींचता है बहुत ज़्यादा हवा

जिये ज़िन्दगी वो सबसे ज़्यादा है बाप का ये बस एक अरमान
बीच में आ रहा है बेटा जिसने कर रखा है बाप को परेशान

बाप चाहता बेटे को बहुत शायद ये है उसकी बापता का क़सूर
भेजना चाहता बेटे को अपने वृद्ध आश्रम हो चुका बाप मजबूर

बाप का तजर्बा होगा कामयाब या फिर जीतेगी बेटे की नादानी
४ मई का है इंतज़ार जब आयेगी बाप बेटे की अजब ये कहानी



102 NOT OUT

4th May 2018

बाप का अरमान बच्चे की जान

बापू माना कि है तेरा सबसे ज्यादा ज़िन्दगी जीने का अरमान
पर बापू अपने इस पागलपन में क्यों ले रहा इस बच्चे की जान

हूँ तेरे लिये बच्चा मैं पर आ चुका हूँ मैं ७५ की उम्र के पास
हो चुका हूँ बुड़ा मैं और मैंने अपने बुढ़ापे को लिया है पहचान

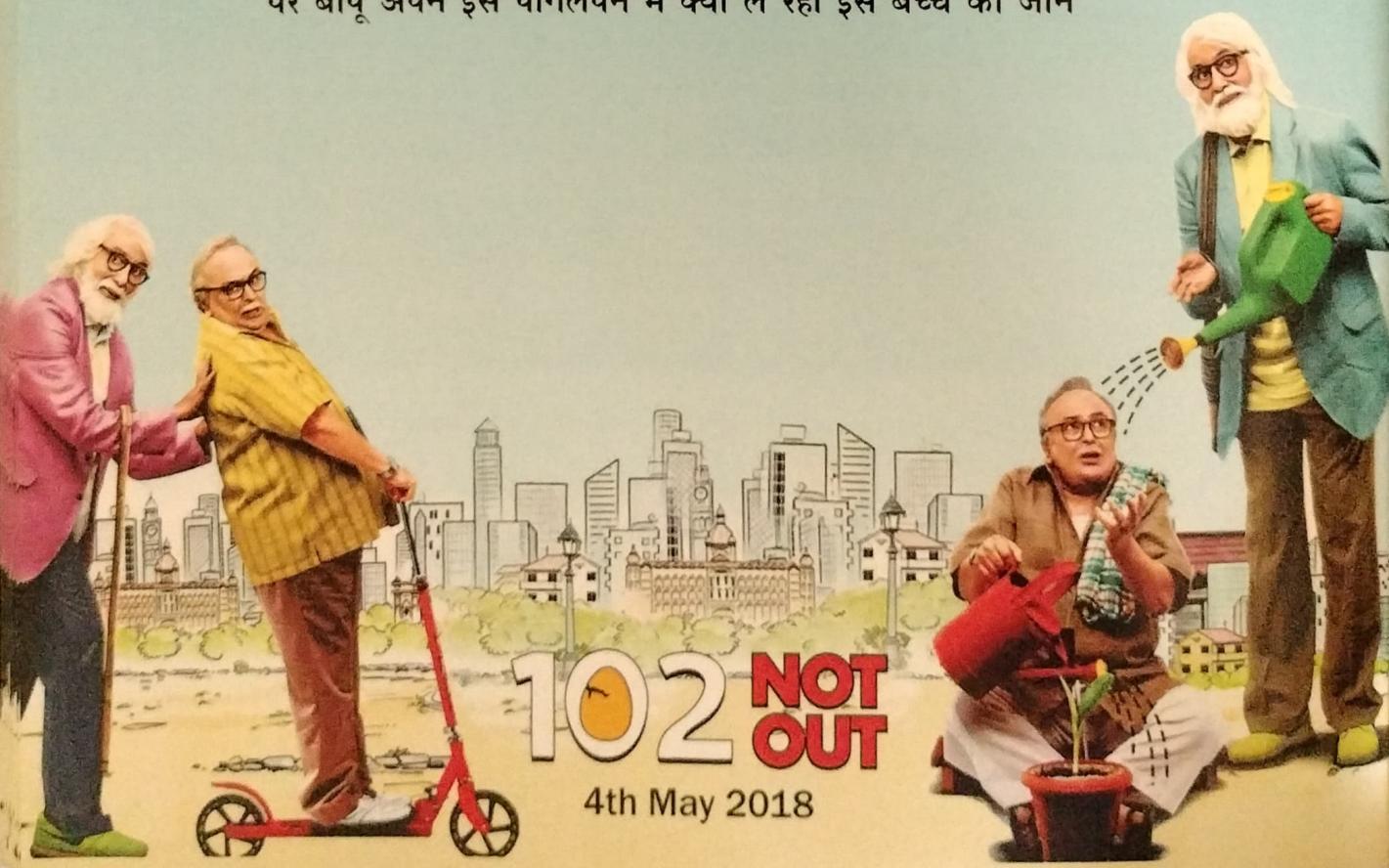
पास पास हैं हम फिर भी बहुत दूर दूर हैं हम, मजबूर हैं हम
आदतें हमारी अलग अलग, मत कर जारी रोज़ नये फ़रमान

मैं वो हो नहीं सकता जो तू है और प्रयास करना है बेकार
मत अड़ा तू टाँग अपनी, नहीं चलने वाली है यहाँ तेरी दुकान

तू नाच गा, मज़े ले ज़िन्दगी के, बढ़ता चला जा, चलते चला जा
करने दे मुझे मेरे मन की बनाना है तुझे जो बना ले तू वो कीर्तिमान

उम्र के इस पड़ाव पर करना नहीं चाहता मैं कोई नया प्रयोग
मेरे लिये तो परेशानी है बुढ़ापा, होगा बुढ़ापा तेरे लिये अभिमान

बापू माना कि है तेरा सबसे ज्यादा ज़िन्दगी जीने का अरमान
पर बापू अपने इस पागलपन में क्यों ले रहा इस बच्चे की जान



102 NOT
OUT

4th May 2018

Badumbaaa...!

सब पूछते क्या है ये गाना, क्या राज है ये badumbaaa
होता दिल जब खुश, दिल से निकली जो अवाज़ है ये badumbaaa

हम हैं, हो आप, बन गया ये परिवार, बहुत बहुत आभार
आज तो ज़ुबां ज़ुबां पर सजा बस साज़ है ये badumbaaa

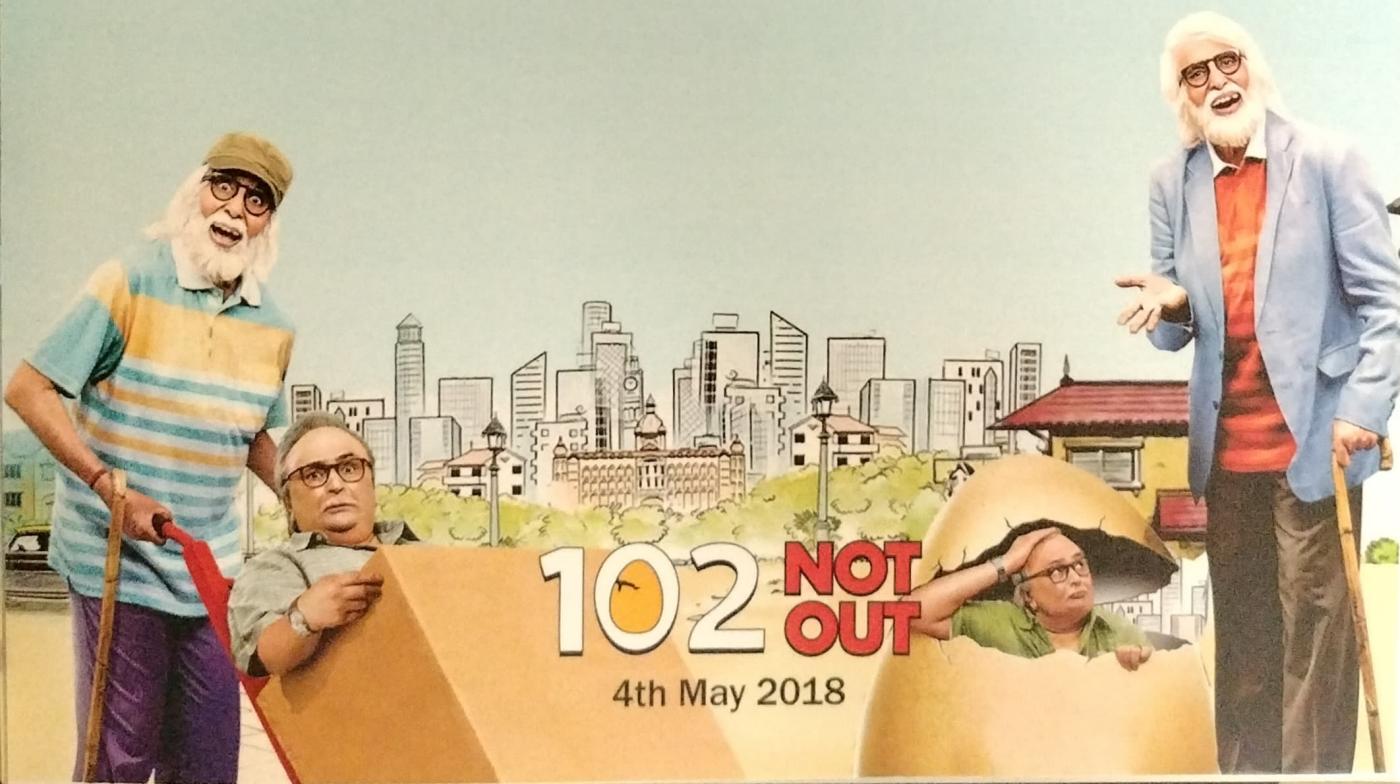
मिले २७ साल बाद, ४२ साल से कर रहे हैं काम साथ साथ
लिखा, गाया, गणेश ने नचाया, दोनों का ग़ज़ब अंदाज़ है ये badumbaaa

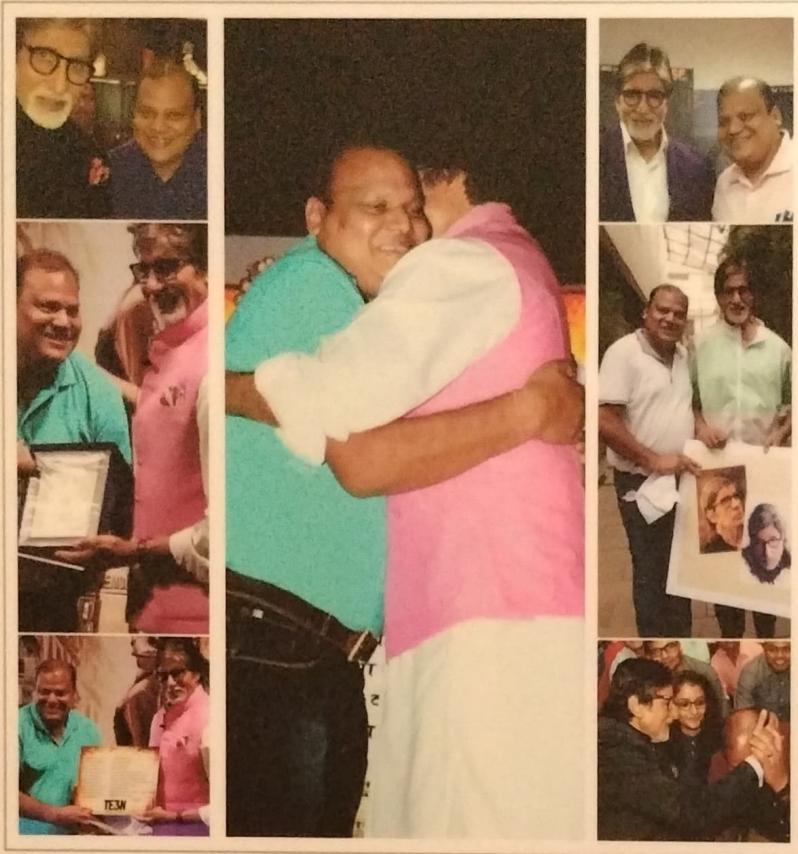
न डर तू प्यारे, समझ इशारे, ज़रा कमर को नचा ले प्यारे
बुढ़ापे से परेशान, होना हो तुझे जवान, तो तेरा इलाज है ये badumbaaa

कर रहे सब बस अब ये ही जब से आपने समझाया, बतलाया
बच्चे, जवान, बुड़े, सब का ज़िन्दगी जीने का ज़ज्बा आज है ये badumbaaa

क्या है इसकी ताकत सबको बता दिया और तो और सबको नचा दिया
बज रहा हर तरफ़ बस ये ही कर रहा दिलों पर राज, सरताज है ये badumbaaa

सब पूछते क्या है ये गाना, क्या राज है ये badumbaaa
होता दिल जब खुश, दिल से निकली अवाज़ है ये badumbaaa





102 NOT OUT

के लिये बहुत बहुत शुभकामनायें।

Ef Vikas Bansal

ABEFTeam

1939, Sector 28 Opp Shiv Shakti Mandir, Faridabad 121008 Haryana
 Mobile : 9873555289 / 9810955586 • Twitter : @VikasbansalEF • E.mail : micky.bansal75@gmail.com